Topic 41 अजन्त पुँल्लिंग अदन्त पञ्चमी, षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति

वाऽवसाने ।

अवसाने कल्पां चरो वा । रामात्, रामाद् । रामाभ्याम् । रामेभ्यः । रामस्य ।

ङौ सि च ।

अतोऽङ्गस्यैकारः । रामयोः ।

ह्रस्वनद्यापो नुट् ।

ह्रस्वान्ताद् नद्यन्ताद् आबन्ताच्चाङ्गात् परस्यामो नुडागमः ।

'बहुग्रेयसी' शब्द की 'यू स्त्र्याख्यौ नदी' से नदी संज्ञा होती है। यहाँ 'रमा' शब्द में 'अजाद्यतष्टाप्' से टाप् प्रत्यय हुआ है अतः आबन्त है। इसीलिए इनसे परे भी 'आम्' को 'नुट्' आगम हो गया है।

नामि ।

अजन्ताङ्गस्य दीर्घः । रामाणाम् । रामे । रामयोः

~~स्त~~ सर्वे कृते - (रमत् + ङेव)

रामाणाम्

राम आम्

राम नुट् आम्

राम न् आम्

रामान् आम्

रामाणा -

षष्ठी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में आम्

अदन्त अंग को नुडागम

अनुबंध लोप

नाम् परे अजन्त अंग को दीर्घ

पूर्व

आदेशप्रत्यययोः ।

इण्कुभ्यां परस्यापदान्तस्य आदेशः प्रत्ययावयवश्च यः सस्तस्य मूर्धन्यादेशः । ईषद्विवृतस्य सस्य तादृश एव षः । रामेषु । एवं कृष्वादयोऽप्यदन्ताः ।

'सुष्वाप' (वह सोया) और 'सिषेव' (उसने सेवा की) आदि में मिलते हैं। षत्व-विधान के लिए दो बातें आवश्यक हैं। सकार को इण् प्रत्याहार या कवर्ग से परे होना चाहिए और सकार को अपदान्त होना चाहिए। इण् या कवर्ग से परे न होने के कारण 'रामस्य' आदि में षकार नहीं होता। इसी प्रकार अपदान्त में न होने के कारण 'हरिसात्' आदि में सकार को षकार नहीं होता।